11-03-24 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – बाप और बच्चों की एक्टिविटी में जो अन्तर है उसे पहचानो, बाप तुम बच्चों के साथ खेल सकता, खा नहीं सकता''

प्रश्नः- सत का संग तारे, कुसंग बोरे – इसका भावार्थ क्या है?

उत्तरः- तुम अभी सत का संग करते हो अर्थात् बाप से बुद्धियोग लगाते हो तो पार हो जाते हो। फिर धीरे-धीरे कुसंग अर्थात् देह के संग में आते हो तो उतरते जाते हो क्योंकि संग का रंग लगता है इसलिए कहा जाता – सत का संग तारे, कुसंग बोरे। तुम देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूल बाप का संग करो अर्थात् बाप को याद करो तो बाप समान पावन बन जायेंगे।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) एक बाप को साथी बनाकर तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से खाऊं... यह अनुभव करना है। कुसंग छोड़ सत के संग में रहना है।

2) कर्मों का हिसाब-किताब याद की यात्रा और कर्मभोग से चुक्तू कर सम्पूर्ण पावन बनना है। संगमयुग पर स्वयं को पूरा ट्रांसफर करना है।

वरदानः- दिल से 'मेरा बाबा'कहकर सच्चा सौदा करने वाले सरेन्डर वा मरजीवा भव

ब्रह्माकुमार कुमारी बनना माना सरेन्डर होना। जब दिल से कहते हो ''मेरा बाबा'' तो बाबा भी कहते बच्चे सब कुछ तेरा। चाहे प्रवृत्ति में हो, चाहे सेन्टर पर हो लेकिन जिसने दिल से कहा मेरा बाबा, तो बाप ने अपना बना लिया, यह दिल का सौदा है, मुख का स्थूल सौदा नहीं। सरेन्डर माना श्रीमत के अन्डर रहने वाले। ऐसे सरेन्डर होने वाले ही मरजीवा ब्राह्मण हैं।

स्लोगनः- अगर मेरा शब्द से प्यार है तो अनेक मेरे को एक मेरे बाबा में समा दो।

12-03-24 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – डेड साइलेन्स में जाने का अभ्यास करो, बुद्धि बाप की तरफ रहे तो बाप भी तुम्हें अशरीरी बनने के लिए सकाश देंगे''

प्रश्न:- तुम बच्चों को जब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है तो कौन-सा साक्षात्कार हो जाता है?

उत्तर:- सतयुग आदि से लेकर कलियुग अन्त तक हम कैसे-कैसे पार्ट बजाते हैं–यह सारा साक्षात्कार हो जाता है। तुम सारे विश्व को आदि से अन्त तक जान जाते हो। जानने को ही साक्षात्कार कहा जाता है। अभी तुम समझते हो कि हम दैवीगुणों वाले देवता थे। आसुरी गुण वाले बने। अब फिर दैवी गुणों वाले देवता बन रहे हैं। अभी हम नई दुनिया, नये घर में जायेंगे।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अपने सब हिसाब-किताब चुक्तू कर साइलेन्स वर्ल्ड में जाने की तैयारी करनी है। याद के बल से आत्मा को सम्पूर्ण पावन बनाना है।

2) ज्ञान सागर के ज्ञान को स्वरूप में लाना है। विचार सागर मंथन कर अपना फैंसला आपेही करना है। जीवनमुक्ति में श्रेष्ठ पद प्राप्त करने के लिए दैवीगुण धारण करने हैं।

वरदान:- बाप के साथ रहते-रहते उनके समान बनने वाले सर्व आकर्षणों के प्रभाव से मुक्त भव

जहाँ बाप की याद है अर्थात् बाप का साथ है वहाँ बॉडी-कॉनसेस की उत्पत्ति हो नहीं सकती। बाप के साथ वा पास रहने वाले दुनिया के विकारी वायब्रेशन अथवा आकर्षण के प्रभाव से दूर हो जाते हैं। ऐसे साथ रहने वाले साथ रहते-रहते बाप समान बन जाते हैं। जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा है ऐसे बच्चों की स्थिति भी ऊंची बन जाती है। नीचे की कोई भी बातें उन पर अपना प्रभाव डाल नहीं सकती।

स्लोगन:- मन और बुद्धि कन्ट्रोल में हो तो अशरीरी बनना सहज हो जायेगा।

13-03-24 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – सारी दुनिया में तुम्हारे जैसा पद्मापद्म भाग्यशाली स्टूडेन्ट कोई नहीं, तुम्हें स्वयं ज्ञान सागर बाप टीचर बनकर पढ़ाते हैं''

प्रश्न:- कौन-सा शौक सदा बना रहे तो मोह की रगें टूट जायेंगी?

उत्तर:- सर्विस करने का शौक बना रहे तो मोह की रगें टूट जायेंगी। सदा बुद्धि में याद रहे कि इन आंखों से जो कुछ देखते हैं यह सब विनाशी है। इसे देखते हुए भी नहीं देखना है। बाप की श्रीमत है–हियर नो ईविल, सी नो ईविल...।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सूर्यवंशी राजधानी की प्राइज़ लेने के लिए बापदादा की आफ़रीन लेनी है। सर्विस करके दिखाना है। मोह की रगें तोड़ देनी हैं।

2) ज्ञान सागर विदेही बाप स्वयं पढ़ाने आते हैं इसलिए रोज़ पढ़ना है। एक दिन भी पढ़ाई मिस नहीं करनी है। बाप समान विदेही बनने का पुरूषार्थ करना है।

वरदान:- अपने प्रैक्टिकल जीवन के प्रूफ द्वारा साइलेन्स की शक्ति का आवाज फैलाने वाले विशेष सेवाधारी भव

हर एक को साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कराना - यह विशेष सेवा है। जैसे साइंस की पावर नामीग्रामी है ऐसे साइलेन्स पावर नामीग्रामी हो जाए। सबके मुख से आवाज निकले कि साइलेन्स पावर साइन्स से भी ऊंची है। वह दिन भी आना है। साइलेन्स के पावर की प्रत्यक्षता अर्थात् बाप की प्रत्यक्षता। साइलेन्स पावर का प्रैक्टिकल प्रूफ है आप सबकी जीवन। हर एक चलते-फिरते पीस के मॉडल दिखाई दें तो साइंस वालों की नजर भी साइलेन्स वालों पर जायेगी। ऐसी सेवा करो तब कहेंगे विशेष सेवाधारी।

स्लोगन:- सेवा और स्थिति का बैलेन्स रखो तो सर्व की ब्लैसिंग मिलती रहेंगी।

''मीठे बच्चे – तुम्हें पढ़ाई कभी मिस नहीं करनी है, पढ़ाई से ही स्कॉलरशिप मिलती है इसलिए बाप द्वारा जो नॉलेज मिलती है उसे ग्रहण करो''

प्रश्नः- लायक ब्राह्मण किसे कहेंगे? उसकी निशानी सुनाओ?

उत्तर:- 1. लायक ब्राह्मण वह जिसके मुख पर बाबा का गीता ज्ञान कण्ठ हो, 2. जो बहुतों को आप समान बनाता रहे, 3. बहुतों को ज्ञान धन का दान-पुण्य करे, 4. कभी आपस में एक-दो के मतभेद में न आये, 5. किसी भी देहधारी में बुद्धि लटकी हुई न हो, 6. ब्राह्मण अर्थात् जिसमें कोई भूत न हो, जो देह अंहकार को छोड़ देही-अभिमानी रहने का पुरूषार्थ करे।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) श्रीमत को छोड़ कभी परमत पर नहीं चलना है। उल्टी-सुल्टी बातों में आकर पढ़ाई से मुख नहीं मोड़ना है। मतभेद में नहीं आना है।

2) अपनी जांच करनी है कि हम कहाँ गफ़लत तो नहीं करते हैं? पढ़ाई पर पूरा अटेन्शन है? समय व्यर्थ तो नहीं गँवाते हैं? आत्म-अभिमानी बने हैं? रूहानी सेवा दिल से करते हैं?

वरदान:- रूहानी अथॉरिटी के साथ निरहंकारी बन सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाने वाले सच्चे सेवाधारी भव

जैसे वृक्ष में जब सम्पूर्ण फल की अथॉरिटी आ जाती है तो वृक्ष झुक जाता है अर्थात् निर्माण बनने की सेवा करता है। ऐसे रूहानी अथॉरिटी वाले बच्चे जितनी बड़ी अथॉरिटी उतने निर्माण और सर्व के स्नेही होंगे। अल्पकाल की अथॉरिटी वाले अंहकारी होते हैं लेकिन सत्यता की अथॉरिटी वाले अथॉरिटी के साथ निरंहकारी होते हैं - यही सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप है। सच्चे सेवाधारी की वृत्ति में जितनी अथॉरिटी होगी उसकी वाणी में उतना ही स्नेह और नम्रता होगी।

स्लोगन:- भाग्य का आधार त्याग है, बिना त्याग के भाग्य नहीं मिलता।

''मीठे बच्चे – ज्ञान सागर बाप तुम्हें रत्नों की थालियां भर-भर कर देते हैं, जितना चाहे अपनी झोली भरो, सब फिकरातों से फ़ारिग हो जाओ''

प्रश्नः- ज्ञान मार्ग की कौन-सी बात भक्ति मार्ग में भी पसन्द करते हैं?

उत्तरः- स्वच्छता। ज्ञान मार्ग में तुम बच्चे स्वच्छ बनते हो। बाप तुम्हारे मैले कपड़ों को स्वच्छ बनाने आये हैं, आत्मा जब स्वच्छ अर्थात् पावन बन जाती है तब घर में जाने के, उड़ने के पंख लग जाते हैं। भक्ति में भी स्वच्छता को बहुत पसन्द करते हैं। स्वच्छ बनने के लिए गंगा में जाकर स्नान करते, लेकिन पानी से आत्मा स्वच्छ नहीं बन सकती।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) कल्याणकारी बाप के हम बच्चे हैं इसलिए अपना और सर्व का कल्याण करना है। कोई ऐसा कर्म न हो जो की कमाई खत्म हो जाए इसमें खबरदार रहना है।

2) पढ़ाई अच्छी तरह से पढ़कर ज्ञान रत्नों से अपनी झोली भरपूर करनी है। स्कॉलरशिप लेने का पुरुषार्थ करना है। बाप समान फ़िक्र से फारिग, निश्चिन्त रहना है।

वरदानः- महसूसता शक्ति द्वारा पुराने स्वभाव, संस्कार से न्यारा बनने वाले मायाजीत भव

इस पुरानी देह के स्वभाव और संस्कार बहुत कड़े हैं जो मायाजीत बनने में बड़ा विघ्न रूप बनते हैं। स्वभाव-संस्कार रूपी सांप खत्म भी हो जाता है लेकिन लकीर रह जाती है जो समय आने पर बार-बार धोखा दे देती है। कई बार माया के इतना वशीभूत हो जाते जो रांग को रांग भी नहीं समझते। परवश हो जाते हैं इसलिए चेक करो और महसूसता शक्ति द्वारा पुराने छिपे हुए स्वभाव संस्कार से न्यारे बनो तब मायाजीत बनेंगे।

स्लोगनः-मेरेपन के अनेक रिश्तों को समाप्त करना ही फरिश्ता बनना है।

16-03-24 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – ज्ञान की डिपार्टमेन्ट अलग है, योग की अलग है। योग से आत्मा सतोप्रधान बनती है, योग के लिए एकान्त की जरूरत है''

प्रश्नः- स्थाई याद में रहने का आधार क्या है?

उत्तरः- तुम्हारे पास जो कुछ भी है, उसे भूल जाओ। शरीर भी याद न रहे। सब ईश्वरीय सेवा में लगा दो। यही है मेहनत। इस कुर्बानी से याद स्थाई रह सकती है। तुम बच्चे प्यार से बाप को याद करेंगे तो याद से याद मिलेगी। बाबा भी करेन्ट देंगे। करेन्ट से ही आयु बढ़ती है। आत्मा एवरहेल्दी बन सकती है।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बाप से सर्च-लाइट लेने के लिए सवेरे-सवेरे उठ बाप की याद में बैठना है। रात्रि को जागकर एक-दो को करेन्ट दे मददगार बनना है।

2) अपना सब-कुछ ईश्वरीय सेवा में सफल कर, इस पुराने शरीर को भी भूल बाप की याद में रहना है। पूरा कुर्बान जाना है। देही-अभिमानी रहने की मेहनत करनी है।

वरदानः- स्व-दर्शन चक्र द्वारा माया के सब चक्रों को समाप्त करने वाले मायाजीत भव

अपने आपको जानना अर्थात् स्व का दर्शन होना और चक्र का ज्ञान जानना अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी बनना। जब स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो तो अनेक माया के चक्र स्वतः समाप्त हो जाते हैं। देहभान का चक्र, सम्बन्ध का चक्र, समस्याओं का चक्र... माया के अनेक चक्र हैं। 63 जन्म इन्हीं अनेक चक्रों में फंसते रहे अब स्वदर्शन चक्रधारी बनने से मायाजीत बन गये। स्वदर्शन चक्रधारी बनना अर्थात् ज्ञान योग के पंखों से उड़ती कला में जाना।

स्लोगनः- विदेही स्थिति में रहो तो परिस्थितियां सहज पार हो जायेंगी।

''मेरे-मेरे का देह-अभिमान छोड़ ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो''

- आज बापदादा अपने चारों ओर के श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को देख रहे हैं।
- अगर ब्रह्मा के हर कदम समान कदम पर कदम फॉलो करते चलेंगे तो एक तो सदा अपने को सहज पुरुषार्थी अनुभव करेंगे और सदा सम्पूर्णता की मंजिल समीप अनुभव करेंगे। ब्रह्मा बाप वतन में आप सब बच्चों के सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ते बनने का आह्वान कर रहे हैं। ''आओ बच्चे, मीठे बच्चे, जल्दी-जल्दी आओ''। ब्रह्मा बाप का आवाज सुनो, कैच करो।
- देह का अभिमान यह बहुत सूक्ष्म है। जहाँ मेरा होगा ना वहाँ अभिमान जरूर होगा। चाहे विशेषता प्रति हो, मेरी विशेषता है, मेरा गुण है, मेरी सेवा है, यह सब मेरापन – यह प्रभू पसाद है, मेरा नहीं। प्रसाद को मेरा मानना, यह देह-अभिमान है। यह अभिमान छोड़ना ही सम्पन्न बनना है।
- वर्तमान समय माया का स्वरूप निगेटिव और व्यर्थ संकल्प का मैजारिटी में है। विश्व कल्याणकारी की स्टेज है – सदा बेहद की वृत्ति हो, दृष्टि हो और बेहद की स्थिति हो। वृत्ति में ज़रा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना नहीं हो।

वरदान:- अविनाशी प्राप्तियों की स्मृति से अपने श्रेष्ठ भाग्य की खुशी में रहने वाले इच्छा मात्रम् अविद्या भव

जिसका बाप ही भाग्य विधाता हो उसका भाग्य क्या होगा! सदा यही खुशी रहे कि भाग्य तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। ''वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य और भाग्य विधाता बाप'' यही गीत गाते खुशी में उड़ते रहो। ऐसा अविनाशी खजाना मिला है जो अनेक जन्म साथ रहेगा, कोई छीन नहीं सकता, लूट नहीं सकता। कितना बड़ा भाग्य है जिसमें कोई इच्छा नहीं, मन की खुशी मिल गई तो सर्व प्राप्तियां हो गई। कोई अप्राप्त वस्तु है ही नहीं इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या बन गये।

स्लोगन:- विकर्म करने का टाइम बीत गया, अभी व्यर्थ संकल्प, बोल भी बहुत धोखा देते हैं।